दुनिया भर में बढ़ता हिन्दी भाषा का कारवाँ

निशा किचलू
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की।

आचार्य विनोबा भावे के शब्दों में:–"यदि मैंने हिन्दी भाषा का सहारा न लिया होता, तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल तक के गाँव–गाँव में जाकर भू–दान, ग्राम–दान का क्रांतिपूर्ण सन्देश जनता तक ना पहुँचा पाता। यदि मैं मराठी का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर और कहीं काम न बनता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा को लेकर चलता तो, कुछ प्रान्तों में तो काम चलता, परन्तु गाँव–गाँव जाकर क्रांति की बात अंग्रेजी द्वारा नहीं हो सकती थी। इसीलिए मैं कहता हूँ कि हिंदी भाषा का मुझ पर बड़ा उपकार है।"

हिन्दी अपेक्षाकृत बड़े भौगोलिक क्षेत्र एवं देश भर को परस्पर जोड़ने वाली भाषा है। पूरे समाज की अस्मिता इससे व्यक्त होती है। इसकी सहायता से पूरब से लेकर पश्चिम तक, उत्तर से लेकर दक्षिण तक लोग विचार–विमर्श करते आये हैं। हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि हिन्दी ही नहीं समस्त भारतीय भाषाओं में भारतीय आत्मा छिपी है, अस्मिता छिपी है, हमारा स्वाभिमान व गौरव छिपा है। तीन दशक पहले जहाँ दक्षिण भारत में हिन्दी भाषी को अलग नजरों से देखा जाता था, अब मुक्त बाजार की अर्थव्यवस्था ने बड़ी मात्रा में शिक्षा और रोजगार के दरवाजे देशभर के नौजवानों के लिए खोल दिये हैं। यही वजह है कि बैंगलुरू, चेन्नई, मदुरै जैसी जगहों पर भी अब हिन्दी भाषियों को अधिक दिक्कत नहीं होती। उत्तर–भारत के शहर भी दक्षिण भारतीय नौजवानों को उसी अनुराग से अपनाते हैं।

हिंदी में खुद को जिलाए रखने की अद्‌भुत क्षमता है।

हिन्दी का यह कारवाँ सिर्फ अपने देश में ही नहीं बढ़ रहा है बल्कि सारी दुनिया में हिन्दीभाषी फैले हुये हैं। न्यूयार्क, यूरोप आदि कई मुल्कों में लोग हिन्दी में बतियाते देखे जा सकते हैं। दुबई, रूस और इग्लैंड में तो पहले भी, अंग्रेजी बोलने की कम जरूरत पड़ती थी। 'फिजी' से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक अखबार **'शांतिदूत'** की प्रसार संख्या लगभग 13 हजार है। भाषा विशेषज्ञ **'जंयती प्रसाद नौटियाल जी'** की मानें, तो हिन्दी ने चीन की 'मैंडारिन' को पीछे छोड़ दिया है। करीब सात अरब लोगों की इस धरती पर हर छठा आदमी हिन्दी समझता है। अमेरिका में दो करोड़ से भी अधिक भारतीय मूल के लोग निवास कर रहे हैं। लगभग 65 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। वहाँ पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। जापान, इग्लैंड, कनाडा, मॉरीशस, इटली, नीदरलैंड, कोरिया, सूरीनाम, पौलैंड, रूस, बल्गारिया, फिजी, फिनलैंड, चीन और भारत का तो प्राचीन संबंध है ही। वे भारतीय जीवन की दर्शन पद्‌धति व बौद्‌धमत से काफी प्रभावित हैं। इसी तरह भारत और नेपाल के बीच सांस्कृतिक व सामाजिक संबंध काफी पुराने हैं।

आज का दौर बहुत बदल चुका है। भूमंडलीकरण के इस दौर में हम सारी दुनिया में फैले हिन्दी भाषियों को एक सूत्र में बांध रहे हैं। उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण के चलते रोजगार तथा व्यापार के क्षेत्र में **हिन्दी** का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। **"सयुक्त राष्ट्र संघ"** की अधिकारिक (राजभाषा) के रूप में हिन्दी को भी मान्यता मिलने की संभावना है। आधुनिक संचार साधन इसमें बड़ी भूमिका अदा कर रहा है। दुनिया भर के तमाम देशों में अनेक रेडियो स्टेशन, टी०वी० और यू–टयूब चैनल हिन्दी का साहित्य और सामग्री लोगों तक पहुँचाते हैं। इंटरनेट की दुनिया में भी हिन्दी का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। अब हिन्दी ब्लॉगों की भरमार है। सरकारी, गैर–सरकारी हिन्दी वेबसाइट भी खूब हैं। सोशल मीडिया में भी हिंदी में लिखा जा रहा है। स्मार्टफोन पर भी अब

'डिफाल्ट' या **'एप'** के जरिये **'की–बोर्ड'** देवनागरी में उपलब्ध है। ट्विटर की तरह हिंदी का मूषक आ चुका है। इंटरनेट पर हिंदी ने तकनीकी बाधा को इस तरह पार किया–

– इंटरनेट पर हिंदी का सफर रोमन लिपि से प्रारंभ हुआ और फॉन्ट जैसी समस्याओं से जूझते हुये यह देवनागरी लिपि तक पहुँच गया।

– यूनीकोड, मंगल जैसे यूनीवर्सल फॉन्ट ने देवनागरी लिपि को कम्प्यूटर पर नया जीवन प्रदान किया।

– स्मार्टफोन पर ट्रांसलेशन 'एप' आये, जो अंग्रेजी को हिन्दी में और हिन्दी को अंग्रेजी में अनूदित करते हैं। अब कुछ मोबाइल कंपनियों के स्मार्टफोन में डिफाल्ट देवनागरी लिपि 'की–बोर्ड' भी उपलब्ध हैं।

– गूगल पर जाकर आप हिन्दी में 'गूगल–नक्शे' का उपयोग कर अपने शहर या जिस शहर में भी आप जा रहे हैं, वहां के ट्रैफिक की व अन्य सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं।

– एक लाख से अधिक संख्या इंटरनेट पर हिन्दी ब्लागर की पहुँच गई है। 1000 से अधिक हिंदी के रचनाकारों की रचनाओं का अध्ययन **"महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा)"** की वेबसाइट **www.hindisamay.com** पर किया जा सकता है।

– गूगल के मुताबिक, भारत में हिंदी बोलने वालों की संख्या 50 करोड़ से अधिक पहुँच गई है। जबकि गूगल पर 1 लाख से अधिक विकीपीडिया के लेख हैं। 15 से अधिक हिंदी के सर्च इंजन हैं। जो किसी भी वेबसाइट का चंद मिनटों में हिंदी अनुवाद करके पाठकों को परोस देते हैं। याहू, गूगल और फेसबुक भी हिंदी में उपलब्ध हैं।

– 70 से अधिक ई–पत्रिकाएं हिन्दी साहित्य से संबधित इंटरनेट पर देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं।

– भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन **(इसरो)** की वेबसाइट भी हिन्दी में उपलब्ध है।

आज पूंजी बाजार नियामक सेबी, बी एस ई, एनएसई, भारतीय जीवन बीमा निगम, भारतीय स्टेट बैंक, रिर्जव बैंक आफ इंडिया, यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, भारतीय लघु विकास उद्योग बैंक की वेबसाइटें हिंदी में भी उपलब्ध हैं। भारत स्थित कई विदेशी दूतावासों की अग्रेंजी वेबसाइट पर हिंदी में जानकारी उपलब्ध है। गूगल इंडिया के मुताबिक गूगल ने **"हिंदी वेब डॉट कॉम"** से एक ऐसी सेवा शुरू की है जो इंटरनेट पर हिंदी में उपलब्ध समस्त सामग्री को एक जगह ले जाएगी। इसमें **'हिंदी वॉयस सर्च'** जैसी सुविधा भी शामिल है।

हिन्दी भाषा का यह कारवाँ निरन्तर बढ़ता जाये इसके लिये हमें अपने नौनिहालों के मन में **'राजभाषा हिंन्दी'** के प्रति सम्मान लाना होगा। विज्ञान, इंनीनियरिंग चिकित्सा आदि उच्च शिक्षा की किताबों को अधिक से अधिक हिन्दी माध्यम में लाना होगा।

और अंत में, कहा जाता है कि 'स्वीटजरलैंड में आल्पस पर्वत' के ऊपर जाने वाले 'रोप वे ट्राली' स्टेशन पर एक बड़ा सा साइन बोर्ड लगा है–उसमें लिखा है:– **"आल्पस पर्वत पर आपका स्वागत है।"** यह वाक्य विश्व की पाँच भाषाओं में लिखा गया है, उसमें से एक भाषा हिन्दी है।

–जय हिन्द की हिन्दी–